श्री सुंदरबाई के चरन पसाए, मूल वचन हिरदे चढ़ आए।
चरन फले निध आई एह, अब ना छोडूं चित चरन सनेह।। १८ ।।

श्री श्यामा महारानीजी के चरणों की कृपा से परमधाम के मूल वचन याद आ गए हैं। इन चरणों की कृपा से मुझे यह न्यामत मिली है। अब किसी तरह से भी राजजी के चरणों को नहीं छोडूंगी।

चरन तले कियो निवास, इंद्रावती गावे प्रकास।
भान के भरम कियो उजास, पावे फल कारन विश्वास।। १९ ।।

श्री इन्द्रावतीजी श्री राजजी के चरणों का सहारा लेकर प्रकाश की वाणी को जाहिर करती हैं तथा संशय मिटाकर ज्ञान का उजाला करती हैं। वाणी पर जिनका जैसा विश्वास है, उनको वैसा ही फल मिलता है।

विश्वास करके दौड़े जे, तारतम को फल सोई ले।
तिन कारन करों प्रकास, ब्रह्मसृष्टी पूरन करूं आस।। २० ।।

जो इस वाणी पर विश्वास करके चलता है, तारतम का फल उसी को ही मिलता है। इस वास्ते वाणी को जाहिर कर ब्रह्मसृष्टि की इच्छाओं को पूर्ण करूंगी।

इंद्रावती धनी के पास, रास को कियो प्रकास।
धनिऐं दई मोहे जाग्रत बुध, तो प्रकास करूं तारतमकी निध।।२१।।

श्री इन्द्रावतीजी ने धनी की कृपा से ही अखण्ड रास को जाहिर किया है। इन्हें धनी की कृपा से जागृत बुद्धि मिली है। अब उसके प्रकाश से तारतम वाणी को जाहिर करती हूं!

।। प्रकरण ।। १९ ।। चौपाई ।। ३९२ ।।

गुणों को धनी की तरफ लगाना

अब करूं अस्तुत आधार, वल्लभ सुनो विनती।
एते दिन मैं ना पेहेचाने, मोहे लेहेर माया जोर हुती।। १ ।।

हे मेरे धनी ! आपकी वन्दना करती हूं। आप मेरी विनती सुनें। आज तक मैंने आपको पहचाना नहीं था। मैं माया में मग्न थी।

भानूं भरम मोह जो मूलको, लेऊं सो जीव जगाए।
करूं अस्तुत पियाकी प्रगट, देऊं सो पट उड़ाए।। २ ।।

मैं मूल से ही मोह के संशय को मिटाती हूं और जीव को जगाती हूं। सामने पड़े मोह के परदे को पिया की वन्दना कर उड़ा देती हूं।

सोभा पिउ की सब्दातीत, सो आवत नहीं जुबांए।
जोगवाई जेती इन अंग की, सो सब मूल प्रकृती मांहें।। ३ ।।

पिया की शोभा बेहद की है, जिसका जबान से वर्णन होता नहीं है। मेरे तन की जितनी भी शक्तियां हैं, वह सब माया की ही हैं।

Nijanand App

अब किन बिध करूं मैं अस्तुत, मेरे जीव को ना कछू बल।
जीव जोगवाई सब अस्थिरकी, क्यों बरनों सोभा नेहेचल।।४।।

मेरे जीव में कोई शक्ति नहीं है। मैं कैसे आपकी वन्दना करूं? मेरे शरीर की सब शक्ति नाशवान है। इसमें मैं अखण्ड की शोभा का वर्णन कैसे कर सकती हूं?

पेहेले जीवों करी अस्तुत, भली भांत भगवान।
पंडिताई चतुराई महाप्रवीनी, किव कर हिरदे आन।।५।।

पहले कुछ जीवों ने अपनी पण्डिताई, चतुराई और विद्वता से कविता बनाकर विष्णु भगवान की वन्दना की।

ए किव प्रवाही जब देखिए, तामे कोई कोई भारी वचन।
ए तो देवें सोभा अचेत में, पर मोहे सालत है मन।।६।।

प्रवाहियों की कविताओं को जब देखते हैं तो उनके अन्दर भी कोई-कोई महान् शब्द मिलते हैं। इन प्रवाहियों को यह सुध नहीं है कि यह वचन तो केवल हमारे धनी अक्षरातीत के लिए ही कहे जाते हैं। वह उन्हें अपने भगवानों पर घटाते हैं। यह बात मेरे मन में चुभती है।

बेसुध भए देवे एती सोभा, तो कहा करे कर पेहेचान।
जो मुख वचन एक कहों प्रवाही, तो सुन्या नहीं निरवान।।७।।

यह प्रवाही लोग बेसुधी में सच्चिदानन्द शब्द का सम्बोधन विष्णु भगवान को कर देते हैं। यदि उनको पारब्रह्म की पहचान हो जाए तो कौन से शब्द उपयोग में लाएंगे। यदि मैं भी प्रवाहियों की तरह अपने धनी की शोभा के लिए वचन कहूं तो फिर हमने धनी की वाणी को समझा ही क्या? हममें और उनमें अन्तर ही क्या रहा? हम भवसागर से पार कैसे हों? भगवान शब्द बैकुण्ठ तक है और धाम धनी, सच्चिदानन्द केवल हमारे राजजी महाराज के लिए है।

न कछू सुनिया वेद पुरान, न कछू किव चातुरी।
एक दोए वचन सुने मुख धनी के, तिनसे सुध सब परी।।८।।

मैंने न तो वेद पुराणों को सुना है और न ही कविता बनाने की चतुराई को ही जाना है। धनी के दो एक वचनों से ही मुझे क्षर, अक्षर और अक्षरातीत का सब ज्ञान हो गया है।

सो भी न सुन्या चित देयके, न तो जोर गया पूर चल।
पर जो रे गुन आड़े माया के, ताथें ले न सकी बूंद जल।।९।।

धनी तो दरिया के पूर (प्रवाह) के समान ज्ञान देते थे, पर मैंने चित्त देकर सुना ही नहीं। मेरे माया के गुण, अंग, इन्द्रिय आड़े आ गए (अहंकार), इसलिए मैं उनके ज्ञान में से कुछ न ले सकी।

अब तिन गुन को कहा दीजे उपमा, धिक धिक पड़ो ए बुध।
आगे तूं सिरदार सबन के, तें क्यों न लई ए निध।।१०।।

धनी के ऐसे बेशुमार (अपार) ज्ञान के गुणों को यहां बैठकर किन शब्दों से उपमा दें? हे बुद्धि ! तुझे धिक्कार है। तू तो सब से आगे थी। तूने इस ज्ञान रूपी न्यामत को क्यों नहीं लिया?

Nijanand App

अब जागी बुध कहूं मैं तोको, तूं है बुध को अवतार।
कर निरने तूं माया ब्रह्म को, खोल तू पार द्वार।। ११ ।।

हे बुद्धि ! अब तू जागृत हो गई है। तू ही बुध का अवतार है। तू ही माया और ब्रह्म के अलग-अलग भेद बताकर पार के दरवाजे खोल दे।

और न कोई बुध मुझ जैसी, मैं ही बुध अवतार।
धाम धनी ग्रहूं इन विध, और अखंड करूं संसार।। १२ ।।

अब बुद्धि कहती है कि अब तक कोई भी मेरी जैसी बुद्धि नहीं है। मैं ही बुध का अवतार हूं। धाम धनी को इस तरह ग्रहण करूंगी कि सारे संसार को अखण्ड कर दूंगी।

ए बुध रही हमारे आसरे, जो सब थें बड़ा अवतार।
बुधजी बिना माया ब्रह्म को, कोई कर न सके निरवार।। १३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि जागृत बुद्धि (असराफील, फरिश्ता) हमारी शरण में आने से ही सबसे बड़ा बुध अवतार के रूप में जाहिर हुई। इस जागृत बुद्धि (परा शक्ति) के बिना माया और ब्रह्म को जुदा जुदा करके कोई नहीं दिखा सका।

सुन्य निराकार निरंजन, तिनके पार के पार।
बानी गाऊं तित पोहोंच के, इन चरनों बुध बलिहार।। १४ ।।

धाम धनी के चरणों पर मैं इस जागृत बुद्धि से बलिहारी जाती हूं। उनकी कृपा से शून्य, निराकार, निरंजन के पार बेहद योगमाया का ब्रह्माण्ड तथा उसके पार अक्षर-अक्षरातीत के धाम में पहुंच कर वहां का वर्णन करूंगी।

जो नहीं विष्णु महाविष्णु को, बुधजी पोहोंचे तित।
मेरे हिरदे चरन धनी के, इने ए फल पाया इत।। १५ ।।

जिस परमधाम में विष्णु, महाविष्णु भी नहीं पहुंचते, वहां जागृत बुद्धि पहुंची। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मेरे हृदय में धनी विराजमान हैं। हृदय की जागृत बुद्धि से मैंने धनी के स्वरूप की पहचान की। जिनकी कृपा से ही परमधाम के अन्दर तक का वर्णन किया। (मारफत सागर प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ २३ ॥) में ऐसा वर्णन है।

ए सार पाए सुख उपजे, धंन धंन ए बुध अवतार।
अबलों किन ब्रह्मांड में, किन खोल्या न ए दरबार।। १६ ।।

परमधाम के अन्दर की लीला का ज्ञान मिला तो बहुत सुख हुआ। जागृत बुद्धि का अवतार धन्य-धन्य धन्यवाद है। आज तक इस ब्रह्माण्ड में अक्षरातीत के धाम की पहचान किसी ने नहीं दी।

लीला इन अवतार की, करसी सब अखंड।
धंन धंन इन अवतार की, वानी गासी सब ब्रह्मांड।। १७ ।।

अब यही बुध अवतार (असराफील) सारे ब्रह्माण्ड को अखण्ड करेगा। परमधाम की वाणी सारे ब्रह्माण्ड के लोग अखण्ड होने पर गाएंगे। इसलिए यह बुध अवतार धन्य है।

Nijanand App

अब कहूं तोको श्रवना, तोको धनिए कहे वचन।
क्यों न लई बानी वचिखिन, फिट फिट भूंडे करन।। १८ ।।

हे मेरे कानो ! मैं तुमको कहती हूं। धनी ने तुम्हें तरह-तरह के वचन कहे, परन्तु तुमने इस अद्भुत वाणी को क्यों नहीं ग्रहण किया? हे पापी कानो ! तुमको धिक्कार है।

मेरे तो मुदा तुम ऊपर, लेना तुमारे जोर।
धनिएं तो धन बोहोतक दिया, पर तें लिया न हरामखोर।। १९ ।।

हे मेरे कानो ! मेरा तो कुल मुद्दा (भरोसा) तुम्हारे ऊपर ही था और ज्ञान हमें तुम्हारी ताकत से ही मिलना था। धाम धनी ने तो बहुत धन (वाणी सुनाई) दिया पर तुमने हरामखोरी की और वाणी सुनी नहीं।

अब अपना तूं संभार श्रवना, हो वचिखिन वीर।
वानी जो वल्लभ की, सो लीजो द्रढ़ कर धीर।। २० ।।

हे कान ! तू अपने आपको सम्भाल और चतुर, बुद्धिमान बन तथा प्रीतम की वाणी को दृढ़ता के साथ सुनकर ग्रहण कर।

श्रवना कहे सुने मैं नीके, विध विध के वचन।
पूरी पिउ ने आस हमारी, उपज्यो आनन्द घन।। २१ ।।

अब कान उत्तर देते हैं कि मैंने धनी की वाणी के तरह-तरह के वचन अच्छी तरह से सुने हैं। प्रीतम ने हमारी चाहना को पूर्ण किया है और मुझे बड़ा आनन्द मिला है।

अब वचन लेऊं सब सार के, भी यों कहे श्रवन।
इन बिध बानी ग्रहूं मैं प्यारी, ज्यों सब कोई कहे धंन धंन।। २२ ।।

कान यह भी कहते हैं कि अब हम सच्चे सार वाले (परमधाम वाले) वचनों को ही ग्रहण करेंगे। इस तरह से प्यारी वाणी को ग्रहण करेंगे कि सभी हमें धन्य-धन्य कहें।

बेसुध नींद कहूं मैं तोको, तूं निठुर नीच निरधार।
हुई तूं सब गुन के आड़े, ना लेने दई निध आधार।। २३ ।।

हे मूर्ख नींद ! मैं तुझको कहती हूं। तू इतनी कठोर और नीच क्यों हुई? तू मेरे सब गुणों के आड़े परदा लगाकर बैठ गई और धनी की अखण्ड वाणी को नहीं लेने दिया।

तूं तो माया रूप पापनी, तें डबोई ले कर बाथ।
तें श्रवना को सुनने ना दिया, आलस जम्हाई तेरे साथ।। २४ ।।

हे नींद ! तू तो निश्चित ही माया का रूप है, पापिनी है। तूने मुझे लिपटाकर डुबा दिया। आलस्य और जम्हाई (उबासी) तेरे साथी हैं। इन्होंने कानों को सुनने नहीं दिया।

अनेक अंधेर दई तें जीव को, ज्यों मीन बांधे मांहें जाल।
जिन नैनों निध निरखूं निरमल, तिन नैनों आड़ी भई पाल।। २५ ।।

हे नींद ! तूने जीव को ऐसे बन्धन में बांध रखा है जैसे मछली जाल में बंध जाती है। जिन आंखों से मुझे धनी के दर्शन मिलने थे, उनके आगे तूने पलकों का परदा डाल दिया।

Nijanand App

फिट फिट भूंडी दुष्ट पापनी, तोको दई अनेक धिकार।
पेहेले अवसर गमाईया, अब नीके निरखो भरतार।। २६ ।।

हे दुष्ट पापिनी नींद ! तुझे अनेक प्रकार से धिक्कार है। पहले भी तूने अवसर खो दिया। अब अच्छी तरह अपने प्रीतम को देख ले (पहचान कर ले)।

तूं करत मृतक समान, ऐसी निपट निखर।
अब तूं आओ आड़ी माया के, ज्यों निरखूं धनी निज घर।। २७ ।।

हे नींद ! तू जीव को मुर्दे के समान कर देती है। तू बिल्कुल ढीठ है। अब तू माया के आड़े आ जिससे मैं धनी और परमधाम को देख सकूं।

नींद कहे आतम जब जागी, तब क्यों रह्यो मैं जाए।
नींद कहे मैं जात हों, लागूं तुमारे पाए।। २८ ।।

अब नींद कहती है कि जब आत्मा जागृत हो जाती है तो मैं किसी तरह से नहीं रह सकती। अब मैं तुम्हारे चरण छू कर जा रही हूं।

अब आई तूं अरुचड़ी, जब मिले मोहे श्री राज।
ऐसी अंधी अकरमन, तूं सरजी किस काज।। २९ ।।

हे अरुचड़ी (अनिच्छा)! जब मुझे श्री धाम धनी मिले थे, तू अन्धी बदनसीब क्यों बन गई? तू किस काम के लिए पैदा हुई है?

फिट फिट भूंडी तें भुलाई, अब कर कछू बल।
आतम दृष्ट जुड़ी परआतम, हो माया मांहें नेहेचल।। ३० ।।

हे अनिच्छा ! पापिनी, तुझे धिक्कार है। तूने निश्चित ही मुझे भुला दिया। अब अपनी ताकत लगा। अब मेरी आत्मा परआतम से जुड़ गई है। तू माया में जाकर, अपना घर बना (अखण्ड होकर वही रहना)।

अरुचड़ी कहे मैं बलवंती, मोको न जाने कोए।
छानी होए के बैठूं जीव में, भानूं सो साजा न होए।। ३१ ।।

अब अरुचड़ी (अनिच्छा) कहती है कि मैं इतनी बलवान हूं कि मेरी ताकत को कोई नहीं जानता। मैं जीव के अन्दर जब छिपकर बैठ जाती हूं तो उसका नाश हो जाता है और कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

धनी अपना जब आप संभारे, तब चोरी करे क्यों चोर।
अब उलटाए करूं मैं सीधा, बैठों माया में जोर।। ३२ ।।

अरुचड़ी (अनिच्छा) कहती है कि जब तन का मालिक जीव सम्भल जाता है तो चोर चोरी नहीं कर सकता (कोई भी अंग उसको धनी से मिलने में आड़े नहीं आ सकता)। अब जीव को उलटाकर सीधे रास्ते में लगाकर मैं माया में चली जाती हूं।

तलबे सेवा करूं सब अंगों, मोहे मिले धनी एकांत।
तिन समें आए बैठी अंग में, फिट फिट भूंडी स्वांत।। ३३ ।।

हे पापी स्वांत (मौन)! तुझे धिक्कार है। तू उस समय मेरे तन में आकर बैठ गयी जब मुझे अकेले में धनी मिले थे। मैं अपने सब अंगों से बड़ी चाह से धनी की सेवा करना चाहती थी।

Nijanand App

धनी मिले स्वांत न कीजे, क्यों बैठिए करार।
जाग दौड़ कीजे सब अंगों, स्वांत कीजे संसार।। ३४ ।।

जब धनी मिल जाएं तो स्वांत (मौन) होकर बैठे नहीं रहना चाहिए। उस समय जागृत होकर सब अंगों से सेवा करनी चाहिए और संसार की तरफ से मौन रहना चाहिए।

स्वांत कहे मैं तबलो थी, जोलो नींद हुती आतम।
अब मैं बैठी तरफ माया के, विलसो अपना खसम।। ३५ ।।

स्वांत (मौन) कहती है मैं तभी तक थी जब तक आत्मा नींद में सोई थी। अब मैं माया की तरफ बैठ गई हूं। तुम अपने धनी से आनन्द लो।

अब कहूं तोको लोभ लालची, फिट फिट मूरख अजान।
लोभ न लाग्या चरन धनी के, जासों पाईए घर निरवान।। ३६ ।।

हे अज्ञानी मूर्ख लालची लोभ ! तुझे धिक्कार है। अब तुझसे कहती हूं, जब मुझे धनी के चरण मिले थे, जिनसे निश्चित ही परमधाम का सुख प्राप्त होने वाला था, उस समय, हे लोभ ! तू क्यों नहीं आया?

अब जिन जाओ तरफ माया के, मेरे लोभ लालच दोऊ जोड़।
जोर पकड़ो दोऊ पाउं पिउ के, करो रात दिन दौड़।। ३७ ।।

हे लोभी लालच! अब तुम माया की तरफ मत जाओ। तुम दोनों धनी के चरणों को पकड़ लो और रात-दिन उन्हीं में मग्न रहो।

कहे लोभ लालच क्या गुनाह हमारा, जोलो जीव ना करे खबर।
अब तुम पिउ देखाया हमको, तो देखो पिउ ग्रहें द्रढ़ कर।। ३८ ।।

लोभ और लालच कहते हैं कि जब जीव ही सावचेत न हो तो हमारा क्या गुनाह है? अब तुमने हमें धनी के दर्शन करा दिए हैं, तो देखो अब हम प्रीतम के चरणों को पकड़कर रखेंगे।

भट परो तृष्णा कहूं तोको, तूं निपट निठुर निरधार।
और सबे गुन तृपत होवें, पर तो में कोई भूख भंडार।। ३९ ।।

हे तृष्णा ! तुझे आग लग जाए। तू निश्चित ही बड़ी कठोर और नीच है। सब गुण तो सन्तुष्ट हो जाते हैं पर तू तो केवल भूख का भण्डार है। कभी तृप्त नहीं होती।

अब तोको क्यों काढ़ूं रे तृष्णा, तोसों बड़ा मोहे काम।
तृष्णा लाग तूं पूरन पिउसों, ज्यों बस करूं धनी श्रीधाम।। ४० ।।

अब हे तृष्णा ! तुझे क्यों भगाऊं? तुझसे मुझे बड़ा काम है। तू अब सच्चे धनी में लग जा जिससे धाम धनी को मैं अपने वश में कर लूं।

तृष्णा कहे मैं क्योंए न छोड़ूं, जो आतमाऐ देखाया आधार।
तुम जाए गुन और फिराओ, मैं छोड़ूं नहीं निरधार।। ४१ ।।

तृष्णा उत्तर देती है कि जब आत्मा ने आधार के दर्शन करा दिए हैं तो मैं किसी तरह भी नहीं छोड़ूंगी। तुम और गुणों को जाकर सीधा करो। मैं धनी को कभी नहीं छोड़ूंगी।

मूरख मोह कहूं मैं तोको, जब आतम धनी घर आया।
इन अवसर तूं चूक्या चंडाल, जाए बैठा मांहें माया।। ४२ ।।

हे मूर्ख मोह ! मैं तुझको कहती हूं कि जब आत्मा के धनी घर आए थे तो तू माया में जाकर बैठ गया। हे चाण्डाल मोह ! इस अवसर को तूने निश्चय ही हाथ से गंवा दिया।

Nijanand App

अब आओ तूं वालाजी में, मायासों कर बिछोह।
देखूं जोर करे तूं कैसा, सांचे सिपाही मेरे मोह।।४३।।

हे मोह ! तू अब माया को छोड़कर वालाजी में आ। तू तो मेरा सच्चा सिपाही है। देखती हूं तू कितनी ताकत लगाता है।

बात बड़ी कहे मोह मेरी, मोको जाने प्रेमी सोए।
मैं बैठत हों जित आए के, तितथें उठाए न सके कोए।।४४।।

मोह उत्तर देता है कि मेरे प्रेमी मुझे जानते हैं। मेरी बात बहुत बड़ी है। मैं जहां जाकर बैठ जाता हूं वहां से कोई उठा नहीं सकता।

जो तुम धनी देखाया मोको, होए लागूं मूरख मूढ़ अंध।
एकै विध है मेरी ऐसी, और न जानूं सनंध।।४५।।

मोह उत्तर देता है कि तुमने मुझे धनी की पहचान करा दी, तो अब मैं मूर्खों और अन्धों की तरह धनी को पकड़ रखूं, मेरा एक यही तरीका है। और तरीका मैं नहीं जानता।

हरख सोक तुम भए माया के, धिक धिक तुमको अजान।
आए धनी हरख न आया, चले सोक न आया निदान।।४६।।

हर्ष-शोक को कहा कि तुम माया के हो गए। तुम्हारी इस नालायकी पर धिक्कार है। धनी आए तो खुशी होनी चाहिए थी जो नहीं हुई। उनके जाने पर दुःख होना चाहिए था वह भी नहीं हुआ।

हरख सोक कहे हम निठुर, भए सो अंध अभागी।
धनी बिगर करे कहा हम, जोलों जीव न कहे जागी।।४७।।

हर्ष और शोक उत्तर देते हैं, हम दोनों बड़े कठोर, अन्धे और अभागे हो गए, किन्तु जब तक जीव, जो मालिक है, नहीं जागता तब तक उसके बिना हम क्या करें?

अब तुम आओ नेहेचल सुख में, जिन भूलो अवसर।
माया में लाहा लेऊं धनी का, हरख ले जागो घर।।४८।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हे हर्ष, शोक ! अब तुम अखण्ड सुख में आ जाओ। यह समय हाथ से मत जाने दो। मैं धनी से मिलने का लाहा (लाभ) और हर्ष के साथ परमधाम में जागृत होऊंगी।

हरख कहे मैं क्या करों, जो जीव को नहीं खबर।
सोक कहे न पेहेचान पिउ की, तो बिछुरे जाने क्योंकर।।४९।।

हर्ष कहता है कि जीव को ही खबर नहीं है, सावचेत (सावधान) नहीं है तो मैं क्या करूं? शोक उत्तर देता है कि जब पिया की पहचान ही नहीं है तो मैं कैसे जानूं कि वह बिछुड़ गए?

हरख सोक कहे हम बलिऐ, दोऊ जोधा बड़े जोरावर।
अब पेहेचान करी तुम पिउ की, अब क्योंऐ न भूलों अवसर।।५०।।

हर्ष और शोक दोनों मिलकर बड़े बलवान योद्धा हैं। अब तुमने प्रीतम की पहचान कर ली है, अब हम समय नहीं गंवाएंगे।

फिट फिट जोधा जोरावर तुमको, मद मत्सर अहंकार।
तुम अंतराय करी धनीसों, दौड़ करी संसार।।५१।।

हे मद, मत्सर और अहंकार ! तुम बड़े ताकतवर हो, फिर भी तुम्हें धिक्कार है। तुम धनी से विमुख होकर माया की तरफ भागे।

Nijanand App

तुम तीनों जोधा भए क्यों उलटे, भए माया के दास।
जब जीवनजीं मिले जीवको, तब क्यों न कियो उलास।।५२।।

हे मद, मत्सर, अहंकार ! तुम तीनों ही योद्धा माया के दास हो गए। जीव के जीवन, धनी मिले थे तो तुम्हें उमंग क्यों नहीं आई?

अब तुम संगी हूजो मेरे, धनिऐं कियो मोसों मिलाप।
सिर ल्यो सोभा धनी धामकी, दूर हो मायाथें आप।।५३।।

अब तुम हमारे संगी बन जाओ। मुझे धनी मिल गए हैं। अब धाम धनी की शोभा अपने सिर लो और माया से हट जाओ।

तीनों जोधा बड़े जोरावर, हम तीनों की राह एक।
धनी आतम से क्यों ए न छूटे, जो पड़े विघन अनेक।।५४।।

तीनों योद्धा कहते हैं कि हम तीनों बलवान हैं और हमारा रास्ता भी एक है। अब कितने ही विघ्न पड़ें, आत्मा को धनी से जुदा नहीं होने देंगे।

सेहेज सुभाव फिट फिट तुमको, ऐसे सूर सुभट।
सांचे तुम हुए मायासों, मोसों मिले कपट।।५५।।

हे सहज स्वभाव ! तुम बड़े वीर और लड़ने वाले हो, फिर भी तुमको धिक्कार है। तुम माया से सच्चे बने और मुझे धोखा दिया।

मूरख मूढ़ करी तुम दुष्टाई, हुए नहीं स्वाम धरमी।
मूरख मूढ़ करी तुम ऐसी, धिक धिक चंडाल अकरमी।।५६।।

हे सहज स्वभाव ! तुमने बड़ी दुष्टता की है। तुम स्वामिभक्त नहीं हुए। तुम मूर्ख और मूढ़ हो। चाण्डाल और बदनसीब हो। तुम्हारी करनी पर तुम्हें धिक्कार है।

जोधा दोऊ जोरावर मेरे, तुम तरफ हो जिनकी।
अनेक उपाय करे जो कोई, पर जीत होए तिनकी।।५७।।

तुम दोनों योद्धा बड़े ताकतवर हो। तुम जिनकी तरफ होते हो जीत उन्हीं की होती है। चाहे दूसरा कोई कितने ही उपाय करे।

अब तुमको कहूं खीज के, तुम हूजो सावधान।
प्रेमें पिउ रुदे लपटाओ, जिन करो किन की कान।।५८।।

हे सहज-स्वभाव! अब तुमको खीजकर कहती हूं। तुम सावधान हो जाना। अब तुम अपने प्रीतम से लिपट जाना और किसी की परवाह नहीं करना।

सेहेजे सुभाव दोऊ हम बलिए, कोई करे जो कोट उपाए।
पकड़ें बात जो हम सांची, सो लोपी किनहूं न जाए।।५९।।

शांति और स्वभाव उत्तर देते हैं कि हम दोनों ताकतवर हैं। कोई कितना उपाय भी क्यों न करे पर हम तो सच्ची बात को पकड़कर बैठते हैं जो किसी के छिपाने से छिपती नहीं।

Nijanand App

अब देखियो जीव जोर हमारा, पिउ पकड़ देवें एकांत।
पूरा पास देऊं रंग लाखी, सो क्योंए ना उचटे भांत।।६०।।

हे जीव जी ! अब हमारी ताकत देखना। हम तुम्हें प्रीतम से एकान्त में मिलवा देंगे और तुम पर ऐसा रंग चढ़ा देंगे जो किसी तरह से उतरेगा नहीं।

ममता तूं भई माया की, हलाक किए हैरान।
फिट फिट भूंड़ी चंडालन, तें बड़ी करी मोहे हान।।६१।।

हे ममता ! माया की होकर तूने मुझे हलाक और हैरान कर दिया है। पापिनी चाण्डालिनी ममता ! तुझे धिक्कार है। तूने मुझे बहुत नुकसान पहुंचाया।

अब ममता आओ मेरे पिउ में, तोको पेहेले दई धिकार।
अब संघातन हूजो मेरी, मोहे मिले पिउ सिरदार।।६२।।

हे ममता ! मेरे पिउ में आ जाओ। तुमको मैंने पहले बहुत धिक्कारा था। अब तुम मेरी सहेली बन जाओ। मुझे धाम के धनी मिल गए हैं।

अब मैं चेरी हुई तुमारी, ले देऊं सांची निध।
अब के ए निध क्योंए ना छूटे, करो कारज तुम सिध।।६३।।

ममता जवाब देती है कि मैं आज से तुम्हारी दासी बन गई। सच्ची न्यामत, तुम्हारा धनी लाकर तुमको दे देती हूं। तुम्हारा काम सिद्ध कर देती हूं। तुम्हारे धनी तुमसे कभी नहीं छूटेंगे।

अब फिटकार देऊं कल्पना, उलटी तूं अकरमन।
फिराए खाली करी फजीत, आतम को अति घन।।६४।।

हे बदनसीब कल्पना ! तुझे धिक्कार है। तू उलटी हो गई। धनी को वापस भेजकर तूने हमारी आत्मा को अपमानित किया है।

अब करमन तूं हो कल्पना, कर सेवा मांहें विचार।
धाम धनी मोहे मिले माया में, लाभ लेऊं मांहें संसार।।६५।।

हे कल्पना! तू चुस्त हो जा और सेवा का विचार रख। मुझे धाम के धनी माया में मिले हैं, इसलिए मैं संसार में लाभ लेना चाहती हूं।

कहे कल्पना ए काम मेरा, करूं नए नए अंग उतपन।
बिध बिध की सेवा देखाऊं, धनी विलसो होए धंन धंन।।६६।।

कल्पना उत्तर देती है कि यह मेरा काम है। मैं तन में नए-नए विचार लाकर तरह-तरह की सेवा दिखाऊंगी और फिर धनी से विलास कर कृतकृत्य (धन्य धन्य) हो जाऊंगी।

वैर राग तुम दोऊ जोधा, सूर साम सामे सिरदार।
वैर किया तुम वल्लभजीसों, राग किया संसार।।६७।।

हे वैर और राग ! तुम दोनों ही योद्धा हो। आमने सामने सिरदार (प्रमुख) हो। तुमने प्रीतम से वैर किया और संसार से राग (प्यार) किया।

Nijanand App

बुरी करी तुम अति मोसों, अब मारूं जमधर घाव।
अब अवसर फेर आयो मेरे, जो भुलाए दियो तुम दाव।।६८ ।।

तुमने मेरे से बहुत बुरा सुलूक किया था, मैं यमदूत की मार तुम्हें मारूंगी। मुझे अब फिर अवसर मिला है। इस दांव (मौके) को भुलाना नहीं।

तुम पर मेरे है मुद्दार, ऐसी पीठ क्यों दीजे।
आतम संग मिलाए धनीजी, धंन धंन मोहे कीजे।।६९ ।।

तुम्हारे पर ही मुझे भरोसा है, इसलिए अब धोखा नहीं देना। आत्मा के धनी के साथ मिलाकर मुझे धन्य-धन्य करना।

जुध करो तुम दोऊ जोधा, राग आओ धनी धाम पाया।
बिध बिध वैर कर कठनाई, जाए बैठो मांहें माया।।७० ।।

हे वैर और राग ! तुम दोनों योद्धा ताकतवर हो। हे राग ! तू मेरे में आ, मुझे धाम धनी मिले हैं। हे वैर ! तुम तरह-तरह की कठिनाइयों से युद्ध कर माया में जाओ।

वैर राग कहे क्या गुनाह हमारा, जो जीव न राखे घर।
जो न देखावे धनी विवेकें, तो हम पकड़ें क्यों कर।।७१ ।।

वैर और राग दोनों उत्तर देते हैं कि जब तक जीव ही सावधान न हो तो हमारा क्या दोष है? जीव यदि धनी की पहचान न कराए तो हम धनी को कैसे पकड़ें?

राग कहे मैं भली भांते, पिउजीसों करों रस रीत।
जीव धनी बीच अंतर टालू, गुन देऊं सारे जीत।।७२ ।।

राग कहता है मैं तुम्हारे अन्दर बैठकर पियाजी से एक रस होकर खेलूंगा। जीव और धनी के बीच का अन्तर हटाकर मिला दूंगा।

वैर कहे देखियो बिध मेरी, संग ना आवे संसार।
कोई गुन जीवसों करे लड़ाई, तो मोको दीजो धिकार।।७३ ।।

वैर कहता है कि अब मेरा कमाल देखना। मैं संसार को आपसे मिलने नहीं दूंगा। कोई भी गुण जीव से लड़ाई करे या रुकावट डाले, तो मुझे धिक्कार है।

धिक धिक स्वाद कहूं मैं तोको, मोहे मिल्या था मीठा जीवन।
सो ए स्वाद छोड़ अभागी, जाए पड़या संसार विघन।।७४ ।।

हे स्वाद ! मैं तुझे क्या कहूं? तुझे धिक्कार है। मुझे मीठे प्रीतम मिले थे। उनका स्वाद छोड़कर तू संसार की रुकावटों में चला गया।

अब तूं स्वाद हो सोहागी, ले धनी की मिठास।
इन रंग रस आयो जब स्वाद, तब जेहेर होसी सब नास।।७५ ।।

हे स्वाद! अब तू सुहागी (सौभाग्यवान) बन जा और धनी की अखण्ड मिठास का रस ले। धनी के आनन्द और रस का स्वाद जब तुझे आएगा तो माया का सब जहर नष्ट हो जाएगा।

Nijanand App

स्वाद कहे जब ए सुख आया, तब अभख हुआ मोहजल।
झूठा रंग सब उड़ गया, रस रंग भया नेहेचल।।७६ ।।

स्वाद कहता है कि जब धनी की मिठास का सुख आ गया तो संसार में अब रखा ही क्या है? माया के झूठे स्वाद अब उड़ गए और धनी के अखण्ड आनन्द मिल गए।

फिट फिट भूंडे दुष्ट अभागी, मोहे करायो धनीसो ब्रोध।
मैं जान्या था सखा मेरा, पर तें कमल फिराया क्रोध।।७७ ।।

हे दुष्ट अभागे क्रोध! तुझे धिक्कार है। तूने धनी से मेरी दुश्मनी करा दी है। मैंने तो तुझे अपना दोस्त समझा था। पर, हे क्रोध ! तूने उलटा ही चक्कर घुमाया (मित्रघात किया)।

आया नहीं माया के आड़े, तें किया न मेरा काम।
अवसर आए चूक्या चंडाल, रेहे गई हैड़े में हाम।।७८ ।।

तू माया के आड़े नहीं आया और मेरा काम नहीं किया। हे चाण्डाल ! इस कारण मैं मौका खो बैठी और मेरे दिल की हाम (अभिलाषा) दिल में रह गई।

अब क्रोध तूं कमल फिराओ, उलटाए दे संसार।
जोधा जोरावर अब क्या देखे, कर दे जय जय कार।।७९ ।।

हे क्रोध ! अब तू अपने चक्कर को उलटा घुमा और संसार को उलटा दे। हे योद्धा ! देख क्या रहा है। अब तू ऐसा कर जिससे मेरी जय जयकार हो जाए।

क्रोध कहे मैं अति बलवंता, पर क्या करूं धनी बिन।
अब उलटाए देऊं कर सीधा, फेर कबहूं ना होवे दुस्मन।।८० ।।

क्रोध कहता है कि मैं तो बहुत ही बलवान हूं, परन्तु जीव, जो मालिक है, उसके बिना क्या करूं? अब मैं उलटकर गुणों को ऐसा सीधा कर दूंगा कि वह कभी भी तुम्हारे दुश्मन नहीं होंगे।

अब तोको कहूं चाक चकरड़ा, तू चढ़ बैठा जीव के सिर।
तें खाली ऐसा फिराया, रेहे न सके क्योंऐ थिर।।८१ ।।

हे मन ! तू जीव के सिर पर चढ़कर बैठ गया और तुमने बेकार में इतना घुमाया कि जीव स्थिर नहीं रह सका।

अंध अभागी क्यों हुआ ऐसा, तें क्या सुने न धनी के वचन।
धनी मिले तूं थिर न हुआ, फिट फिट भूंडे मन।।८२ ।।

हे अन्धे अभागे मन ! तू ऐसा क्यों हो गया? क्या तूने धनी के वचन नहीं सुने? धनी मिले थे तो तुझे भटकना छोड़कर स्थिर हो जाना था। हे मन ! तुझे धिक्कार है।

समरथ मन तूं बड़ा जोरावर, क्या कहूं तेरो विस्तार।
तुझ में फैल बिध बिध के, अलेखे अपार।।८३ ।।

हे मन ! तू बड़ा समर्थ है। बड़ा ताकतवर है। तेरी ताकत का कहां तक वर्णन करूं? तुझ में तरह-तरह के तरीके बेशुमार हैं।

Nijanand App

तोसों तो काम बड़ा है मेरा, मद मस्त मेवार।
फिर तूं पख पचीस मांहें, बलवंता बेसुमार।। ८४ ।।

हे मेरे योद्धा मन! तुमसे मेरा बड़ा काम है। तुम बहुत बलवान हो। तुम परमधाम के पच्चीस पक्षों में घूमो।

संकल्प विकल्प है तुझमें, सेवा कर धनी धाम।
उमंग अंग आन निसवासर, कर पूरन मन काम।। ८५ ।।

हे मन ! तेरे अन्दर संकल्प और विकल्प हैं। अंग में उमंग भरकर दिन-रात धनी की मन से सेवा कर और मन की चाहना पूरी कर।

बात बड़ी कहे मन मेरी, मैं सकल विध जानों।
मूल बिना करूं सिरदारी, जीव को भी बस आनों।। ८६ ।।

अब मन उत्तर देता है कि मेरी बात सबसे बड़ी है कि मैं सब हकीकत जानता हूं। मेरा मूल भले कहीं नहीं है, फिर भी मैं जीव को वश में करके सब अंगों पर सिरदारी (प्रमुखता) करता हूं।

जोलों जीव जागे नहीं, तोलों कहा करें हम।
जोर हमारा तबहीं चले, जब जाग बैठो तुम।। ८७ ।।

मन कहता है कि जब तक जीव जागृत नहीं होता, तब तक हम क्या करें? मेरा बल तो तभी चलता है जब तुम जागृत होकर बैठ जाओ।

अब तुम बिध मेरी देखियो, सब विध करूं रोसन।
धाम धनी आन देऊं अंगमें, तो कहियो सिरदार सबन।। ८८ ।।

मन कहता है कि अब मेरी शक्ति देखना। धाम धनी को लाकर तुम्हारे दिल में बिठा दूंगा। फिर सबको तुम्हारी पहचान कराकर तुम्हारी जय जयकार कराऊं, तो मुझे सबका सिरदार (प्रधान) कहना।

कोई जो कदर जाने मेरी, अंग अंदर आनूं वतन।
अनेक विध सेवा उपजाऊं, धनी न्यारे न होवे खिन।। ८९ ।।

यदि मेरी कोई कदर जाने तो मैं परमधाम उसके अन्दर ला दूं। अनेक तरह से सेवा करने की भावना पैदा करूंगा और फिर धनी एक क्षण के लिए भी अलग न हो सकेंगे।

बुरी करी तुम भरम भ्रांतड़ी, यों न करे दूजा कोए।
तारतम जोत उद्दोत के आगे, संसे कबूं न होए।। ९० ।।

हे भ्रम और भ्रान्ति ! तुमने बहुत बुरा काम किया। ऐसा दूसरा कोई नहीं करता। तारतम वाणी के ज्ञान के आगे कोई संशय कभी नहीं आता।

संसे भ्रांत के आकार, जो कदी होते तुमारे।
टूक टूक करूं मैं तिल तिल, फेर फेर तीखी तरवारे।। ९१ ।।

हे संशय और भ्रान्ति ! यदि तुम्हारे आकार होते तो तलवार की धार से टुकड़े-टुकड़े कर देता।

Nijanand App

अब जोर कर जाओ माया में, इनके संग होए तुम।
उजाले तारतम के पेहेचान, ज्यों मूल सरूप देखें हम।।९२।।

हे संशय और भ्रान्ति ! अब तुम ताकत लगाकर माया में जाकर वहीं रहो। तारतम की वाणी से पहचानकर मुझे मूल स्वरूप को देखने दो।

अंतर भ्रांत कहे तुम फेर फेर, मार मार देखाओ डर।
नींद कर बैठे इन जिमी में, सो आप न करो खबर।।९३।।

मन के संशय कहते हैं कि तुम बार-बार मार का डर दिखाते हो और स्वयं माया के भ्रम से भरी नींद में सोए पड़े हो। स्वयं ही अपने आपसे बेखबर हो रहे हो।

घर का धनी अखंड फल पावे, सो इत क्यों सोवे करारे।
गफलत को न छोड़े आपे, फेर फेर हमको मारे।।९४।।

जो घर का मालिक अखण्ड फल की प्राप्ति चाहता है वह यहां बेफिक्र होकर नहीं सोता। स्वयं तो माया की गफलत को छोड़ता नहीं है और बार-बार हमको मारता है।

अब इन तारतम के उजाले, करूं तारतम रोसन।
नेहेचल सुख लेओ तुम सांचे, और भी देऊं सबन।।९५।।

हे मेरे भ्रम और भ्रान्ति ! अब मैं तारतम वाणी के उजाले में अखण्ड तारतम की ज्योति जला दूं जिससे तुम अखण्ड सुख लो और दूसरों को भी मैं सुख दूं।

फिट फिट लज्या तूं भई लौकिक, बांधे कबीले सों करम।
धनी मेरे मोहे आए बुलावन, तित तोहे न आई सरम।।९६।।

हे लज्जा ! तुझे धिक्कार है। तू संसार की हो गई और झूठे कबीले से बंध गई। मेरे धनी मुझे बुलाने के लिए आए थे, पर तुझे शर्म नहीं आई। तू सांसारिक कबीलों में लगी रही।

कहा कियो तें दुष्ट पापनी, ऐसी ना करे कोए।
घर धाम धनी के आगे, करी सरमिंदी मोहे।।९७।।

हे दुष्ट पापिनी लज्जा ! तूने ऐसा क्यों किया ? ऐसा तो कोई नहीं करता। मुझे धाम-धनी के आगे घर में शर्मिन्दा होना पड़ा।

अब सरमिंदी कहूं मैं तोको, तूं देख परआतम सगाई।
बड़ा अवसर पेहेले तूं चूकी, अब फेर आई जोगवाई।।९८।।

हे शर्मिन्दगी ! मैं तुझे कहती हूं कि तू मेरे परआतम के सम्बन्ध को देख। तू पहले बड़े अवसर पर चूक गई। अब फिर से धनी ने तन धारण किया है।

कहे लज्या मैं पेहेले भूली, अवसर धनी ना छोडूं।
सिर माया का भान के, पिउसों मुख ना मोडूं।।९९।।

अब लज्जा कहती है कि मैं पहले भूली थी। अब इस समय धनी को नहीं छोडूंगी। माया का सिर तोडूंगी और पिया से मुख नहीं मोडूंगी।

Nijanand App

फिट फिट आसा तूं भई माया की, बैठी मोहजल में आए।
मैं माया में अखंड फल पाया, सो मोहे दियो हराए।। १०० ।।

हे आशा ! तुझे धिक्कार है। तू भवसागर में आकर माया की होकर बैठ गई। मुझे माया में अखण्ड फल प्राप्त हुआ था जो मेरे हाथ से चला गया (मैं हार गई)।

अखंड धनी फल छोड़ के, निरफल माया झूठ लई।
ए सिर गुनाह हुआ जीव के, तोको सिखापन ना दई।। १०१ ।।

हे आशा ! अखण्ड धनी को छोड़कर तूने व्यर्थ माया को ले लिया। यह गुनाह जीव के सिर पर लगा दिया कि उसने तुझे सूचित नहीं किया।

कहे आसा मोहे दई जगाए, निकट न जाऊं मोहजल।
इन बल मांहें कमी न राखूं, लागी आतम आसा सुफल।। १०२ ।।

अब आशा कहती है कि अब मुझे जगा दिया है। मैं माया के पास भी नहीं जाऊंगी। ऐसा करने में किसी तरह की कमी नहीं रखूंगी। आत्मा को जो अखंड धनी से मिलने की आशा लगी है, वह अब सफल हो जाएगी।

गुन गरीबन आई अकरमन, ना भई सनमुख सावधान।
लाहा लीजे दौड़ धनी का, सो दिया गरीबी भान।। १०३ ।।

हे गरीब दीनता ! तू धनी के सामने सावधान होकर नहीं आई। जब धनी आए थे तब आगे दौड़कर धनी से मिलने का लाभ लेना चाहिए था। तूने आगे न आकर वह मेरा अवसर गंवा दिया।

किन बिध कहूं या सुख की, फिट फिट भूंडे अचेत।
तुझ बैठे न आई तीव्रता, ना तो ए सुख लेत।। १०४ ।।

हे पापी अचेत (बेहोशी) गुण ! तुझे धिक्कार है। इस सुख का वर्णन कैसे करूं जो तेरे बैठने से मुझे तीव्रता नहीं आई। नहीं तो मैं धनी के अखण्ड सुख ले लेती।

कहे गरीबी मैं माया की, मैं बैठों माया मांहें।
लीजो लाहा सुख नेहेचल का, श्री धाम धनी हैं जांहें।। १०५ ।।

गरीबी कहती है कि मैं तो माया की हूं और माया में ही बैठी हूं। जहां धाम धनी हैं, उनका अखण्ड सुख आप लो।

फिट फिट भूंडी न आई तीव्रता, मोहे मिले थे धाम धनी।
ऐसा विलास खोया तें मेरा, बोहोत बुरी करी घनी।। १०६ ।।

हे पापी तीव्रता गुण ! तुझे धिक्कार है। मुझे धाम के धनी मिले थे। तूने मेरा ऐसा आनन्द खो दिया है और बहुत ही बुरा काम किया है।

फेर अवसर आयो है मेरे, चित चेतन कीजे बल।
रात दिन जगाए जीव को, जिन दे मिलने पल।। १०७ ।।

अरी ओ तीव्रता ! अब फिर मेरे हाथ अवसर आया है। तू जल्दी से बल लगाकर जीव को जगा दे। उसे रात-दिन सावचेत रख। उसको जरा भी सुस्त मत होने दे।

Nijanand App

तुझमें बल है सावचेती, चित चेतन अति रोसन।
परआतम बस कर दे आतमां, ना होए अंतराए एक खिन।। १०८ ।।

हे सतर्कता (चुस्ती) ! तू बड़ी बलवान है। तू मेरे चित्त को चौकस रखकर आतम जगाकर परआतम के वश में कर दे। जिससे एक पल के लिए भी धनी से दूर न होना पड़े।

सील संतोख आओ ढिग मेरे, बांधो सागर आड़ी पाल।
गुन सारे हुए अग्या में, पीछे रह्या न कछू जंजाल।। १०९ ।।

हे शील तथा सन्तोष ! तुम मेरे पास आओ। सागर के रोकने के लिए मेढ़ बांधो। मेरी आशा में सारे गुण आ गए हैं। अब कोई झंझट बाकी नहीं है।

सील कहे संतोख सुनो, आपन हुए माया के पाल।
कई बहावे पहाड़ पूर सागर के, मांहें लेहेरें बेहेवट निताल।। ११० ।।

शील कहता है कि हे सन्तोष ! सुनो, अब हम जीव पर माया का पूर (प्रवाह) रोकने के लिए बंध बन जाएं। भवसागर का बहाव बड़े जोर वाला है और लहरें पहाड़ों के समान ऊंची हैं। इस भवसागर में पहाड़ के समान लहरें जीव को बहाकर ले जाने वाली हैं।

भमरियां मांहें बेसुमार, लेहेरां मेर समान।
मछ लड़े बड़े मोहजल के, करनी पाल इस ठाम।। १११ ।।

इस भवसागर के अन्दर बेशुमार भंवर हैं। लहरें पहाड़ के समान ऊंची हैं। बड़े-बड़े मगरमच्छ लड़ने वाले हैं। ऐसे समुद्र के सामने हमें बंध बांधना है।

अब बांधनी पाल खरी करनी, ज्यों ना खसे लगार।
पीछे जल जोर बढ़ा ऊपर अपने, तब सामी सोभा होसी अपार।। ११२ ।।

अब हमें इतना मजबूत बंध बांधना है कि पीछे से कितना भी बड़ा बहाव आए तो हमें जरा भी खिसकना नहीं है और जल के बहाव को पीछे खदेड़ दिया तो अपनी बेशुमार शोभा है।

एह पाल हम बांधी जीवजी, पर तुम जाग करो सावचेत।
फेर नहीं आवे ऐसा समया, सोभा ल्यो साथ में इत।। ११३ ।।

हे जीवजी ! हमने बंध बांध रखा है। अब तुम जागकर सावचेत (सावधान) हो जाओ। ऐसा समय फिर नहीं आएगा। वचनों पर दृढ़ रहकर सुन्दरसाथ के बीच यहीं बैठकर शोभा लो।

जाग जीव तूं जोरावर, क्या देऊं तोको गारी।
तें होए चंडाल अवसर खोया, जीती बाजी हारी।। ११४ ।।

हे मेरे ताकतवर जीव ! तू जाग जा। अब तुझे क्या गाली दूं? तूने चाण्डाल बनकर अवसर खो दिया है और जीती बाजी हार गया है।

कठनाई मैं देखी तेरी, तूं निठुर निपट अपार।
थके धनी तोहे धम धमके, पर तें गल्या नहीं निरधार।। ११५ ।।

हे जीव ! मैंने तेरी कठिनाई को समझा है। तू निश्चित ही कठोर है। धनी तुझे तरह-तरह से समझा कर थक गए पर तू जरा भी गला या पिघला नहीं।

।। प्रकरण ।। २० ।। चौपाई ।। ५०७ ।।

Nijanand App